



प्रीलिमिंस फ़ैक्ट्स : 4 मई, 2018

व्यू पेंशन पासबुक

अपने सदस्यों अथवा हतिधारकों को वभिन्न तरह की ई-सेवाएँ मुहैया कराने वाली कर्मचारी भवषिय नधि संगठन (EPFO) ने 'उमंग एप' के ज़रिये एक नई सेवा शुरू की है। 'व्यू पेंशन पासबुक' वकिल्प को क्लिक करने पर संबंधित पेंशनभोगी को पीपीओ नंबर और अपने जन्म दविस को दर्ज करना पड़ता है।

- इन जानकारियों का सफल सत्यापन हो जाने के बाद संबंधित पेंशनभोगी के पंजीकृत मोबाइल नंबर पर एक ओटीपी भेजा जाएगा।
- इस ओटीपी को दर्ज करने के बाद 'पेंशनर पासबुक' संबंधित पेंशनभोगी के वविरण जैसे कऱिसका नाम, जन्मदिन और उसके खाते में डाली गई पछिली पेंशन रकम से संबंधित जानकारियाँ दर्शाने लगेंगी।
- ववित वर्ष के हिसाब से संपूर्ण पासबुक वविरण डाउनलोड करने की सुवधि भी उपलब्ध है।

उमंग एप के ज़रिये पहले से ही उपलब्ध ई-सेवाएँ

- ईपीएफओ की जो अन्य ई-सेवाएँ उमंग एप के ज़रिये पहले से ही उपलब्ध हैं उनमें कर्मचारी केन्द्रति सेवाएँ (ईपीएफ पासबुक को देख पाना, क्लेम करने की सुवधि, क्लेम पर नज़र रखने की सुवधि), नयिकता केन्द्रति सेवाएँ (प्रतषिठान की आईडी के ज़रिये भेजी गई रकम का वविरण प्राप्त करना, टीआरआरएन की ताज़ा स्थति से अवगत होना), सामान्य सेवाएँ (प्रतषिठान को सर्च करें, ईपीएफओ कार्यालय को सर्च करें, अपने क्लेम की ताज़ा स्थति से अवगत हों, एसएमएस के ज़रिये खाते का वविरण प्राप्त करना, मसिड कॉल देकर खाते का वविरण प्राप्त करना), पेंशनभोगियों को दी जाने वाली सेवाएँ (जीवन प्रमाण को अद्यतन करना) और ई-केवाईसी सेवाएँ ('आधार' से जोड़ना) शामिल हैं।

वशिव प्रेस स्वतंत्रता दविस

दुनयिा के कऱिसी भी देश के उदय और उसके वविकास में पत्रकारों की बहुत अहम भूमिका होती है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय में भी लोकतंत्र के इस चौथे स्तंभ ने बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका नभिाई थी। अक्सर पत्रकारों की स्वतंत्रता के संबंध में सवाल खड़े होते हैं, पछिले कुछ समय से तो यह मुद्दा नरितर चर्चा का केंद्र बना हुआ है। प्रेस की स्वतंत्रता को मद्देनज़र रखते हुए प्रत्येक वर्ष 3 मई को अंतरराष्ट्रीय प्रेस स्वतंत्रता दविस का आयोजन कयिा जाता है।

- यूनेस्को की जनरल कॉन्फ्रेंस के सुझाव के बाद वर्ष 1993 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा इस दविस की शुरुआत की गई, इसके कुछ समय बाद 3 मई को वशिव भर में अंतरराष्ट्रीय प्रेस स्वतंत्रता दविस मनाया जाने लगा।
- अंतरराष्ट्रीय प्रेस स्वतंत्रता दविस को प्रेस की स्वतंत्रता के मूल्यांकन, प्रेस की स्वतंत्रता पर बाहरी तत्त्वों के हमले से बचाव और प्रेस की सेवा में दविगत हुए पत्रकारों को श्रद्धांजलि देने के रूप में मनाया जाता है।
- पछिले कुछ वक्त से पत्रकारों पर हमलों के मामलों में वृद्धि हुई है, इस कारण प्रेस की स्वतंत्रता पर सवाल उठने लगे हैं। वशिव में पत्रकारों की हत्या के मामले में 57 फीसदी की वृद्धि दर्ज की गई है। पत्रकारों पर हमले के मामलों में अफगानस्तान शीर्ष पर है।

बदलता मलेरयिा का पैटर्न

हाल ही में वजिज़ान पत्रिका 'प्लस वन' में प्रकाशति एक अध्ययन पत्र में यह बात सामने आई है कऱि भारत में मलेरयिा के पैटर्न में परिवर्तन आ रहा है। इस शोध पत्र के अनुसार, आमतौर पर भारत में पी (प्लाज्मोडयिम) वविक्स के मामले दर्ज कयिे जाते थे जो कऱिमलेरयिा का हल्का रूप होता है और इसका आसानी से इलाज भी हो जाता है, लेकनि अब बड़ी संख्या में पी (प्लाज्मोडयिम) फलसपिरम के मामले सामने आ रहे हैं। यह मलेरयिा का एक भयंकर एवं घातक रूप है।

- मलेरयिा मादा एनाफिलीज मच्छर के ज़रिये फैलता है और यह प्लाज्मोडयिम परजीवी की चार अलग प्रजातियों/प्रकारों के कारण होता है - पी वविक्स, पी फलसपिरम, पी मलेरिए और पी ओवले। इन चारों में पी फलसपिरम मलेरयिा का सबसे घातक रूप होता है।
- भारत में मलेरयिा के पैटर्न व वविरण को समझने के लयिे आईसीएमआर (Indian Council of Medical Research - ICMR) नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर रिसर्च इन ट्राइबल हेल्थ (एनआइआरटीएच), जबलपुर के वैज्ञानिकों द्वारा देश भर में अलग-अलग मलेरयिा संक्रमणों की मैपिंग की जा रही है।
- इस शोध के दौरान यह पाया गया कऱिमलेरयिा के संक्रमण के संबंध में मशिरति संक्रमण का अनुपात सबसे अधिक पाया गया अर्थात् रोगी दो या दो से अधिक मलेरयिा परजीवी प्रजातियों से संक्रमति थे।

- इसके अतिरिक्त एक और बात चिन्ता का विषय बन गई है। पहले जो मलेरिया प्रजाति किसी क्षेत्र विशेष तक सीमिति थी, अब वह अन्य क्षेत्रों में भी दखिआई दे रही है।
- पहले यह प्रजाति (पी मलेरिए) केवल ओडिशा तक ही सीमिति थी, लेकिन अब इसका प्रसार पूरे देश में हो रहा है और सबसे अधिक चिन्ता की बात यह है कि न तो इस प्रजाति की पहचान का कोई तरीका ही उपलब्ध है और न ही उपचार के कोई परिभाषित दशा-नरिदेश ही मौजूद हैं।
- भारत की योजना 2030 तक देश को मलेरिया मुक्त बनाना है, लेकिन मलेरिया के पैटर्न में आने वाले इस परिवर्तन ने इस लक्ष्य की प्राप्ति को बेहद कठिन बना दिया है।
- इस समस्या के समाधान के लिये बेहद जरूरी है कि भिरति मलेरिया एवं पी मलेरिए के डायग्नोसिस और उपचार के तरीकों के विषय में और अधिक शोध की जानी चाहिये। साथ ही, इस संबंध में जलद-से-जलद परिभाषित दशा-नरिदेश जारी किये जाने चाहिये।

रोबो जगत में पछिड़ा भारत

इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ रोबोटिक्स के अनुसार, रोबोट कामगारों के मामले में भारत काफी पछिड़ा हुआ है। वर्तमान समय में रोबोट का इस्तेमाल तेज़ी से बढ़ रहा है। दुनिया भर में औद्योगिक उत्पादन से लेकर क्वालिटि कंट्रोल और सेवाओं के निष्पादन तक में रोबोट का इस्तेमाल किया जा रहा है।

- इस श्रेणी में दक्षिण कोरिया का शीर्ष स्थान है। वर्ष 2016 में यहाँ प्रतिदिस हजार कामगारों पर 631 औद्योगिक रोबोट थे। इनका प्रयोग मुख्य रूप से इलेक्ट्रॉनिक्स और निर्माण क्षेत्रों में किया जा रहा था।
- इसके बाद सगिपुर का स्थान आता है। यहाँ प्रतिदिस हजार कामगारों पर 488 औद्योगिक रोबोट हैं। 90 फीसदी रोबोट्स का इस्तेमाल इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योगों में किया जा रहा है।
- मोटर वाहन उद्योगों के क्षेत्र में रोबोट्स का इस्तेमाल सबसे अधिक जर्मनी और जापान द्वारा किया जाता है, यहाँ रोबोट का घनत्व प्रतिदिस हजार कामगारों पर 300 से अधिक है।
- विश्व में जापान औद्योगिक रोबोटों (52 प्रतिशत वैश्विक आपूर्ति) का प्रमुख निर्माता है।
- इन सबके इतर भारत की स्थिति बहुत अलग है। एक अनुमान के अनुसार, 2020 तक देश में 6,000 औद्योगिक रोबोट का प्रयोग किया जाने लगेगा।

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/prelims-fact-04-05-2018>

